3:47 4G 0.00 KB/S Vo LTE1 45
21. Amita satt vi...

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATION IN ENGINEERING RESEARCH & MANAGEMENT ISSN: 2348-4918
PEER REVIEWED AND REFEREED JOURNAL IMPACT FACTOR: 3.693 (INTERNATIONAL JOURNAL)
13TH CONFERENCE (ICOSD) 2019

सतत विकास हेतु समावेशी शिक्षा

डॉ. अमिता जैन
सहायक आचार्य, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ (राज.)

ारांश . समावेशी शिक्षा एक आदर्शात्मक रूप है न कि एक कार्यक्रम इसमें सामान्य शिक्षक को विशिष्ट शिक्षा के योग्य नाना है। जिसमें शारीरिक, बौद्धिक, संवेगात्मक, सामाजिक भाषागत व मूल्य आदि विभिन्न आवश्यकता वाले बालकों के एए सामान्य शैक्षिक व्यवस्था लागू करना भी है। भारत सरकार ने शिक्षा के आधारभूत अधिनियम 'शिक्षा सबके लिए' को मुख माना जिसका मुख्य उद्देश्य प्रत्येक बालक तक शिक्षा को पहुँचाना है। समावेशी शिक्षा का प्रमुख संबंध अक्षमता से क्त छात्रों से हैं, जिन्हें विभिन्न प्रयासों के माध्यम से शिक्षा की मुख्य धारा में सम्मिलित किया जाता है। इस शिक्षा वस्था में विभिन्न संसाधनों का समन्वित रूप से प्रस्तुतीककरण है। विद्यालय शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 000 में छब्त्ज् ने समावेशी शिक्षा पर बल दिया। 1994 में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित "म्छ "चमबपंस छममक कनबंजपवदद्ध एवं यूनेस्को ने भी समावेशी शिक्षा को अपनाने पर बल दिया।

ल शब्द . समावेशी शिक्षा, विशिष्ट शिक्षा,दिव्यांग, शैक्षिक व्यवस्था,सामान्यबालक

प्रस्तावना

क्षा के समावेशीकरण के अंतर्गत विशेष शैक्षणिक वश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक सामान्य छात्र और क दिव्यांग को समान शिक्षा प्राप्ति के अवसर मिलने हिए। इसमें एक सामान्य छात्र एक दिव्यांग छात्र के थ विद्यालय में अधिकतर समय बिताता है। पहले मावेशी शिक्षा की परिकल्पना सिर्फ विशेष छात्रों के एए की गई थी लेकिन आधुनिक काल में हर शिक्षक ो इस सिद्धांत के विस्तृत दृष्टिकोण कोअपनी कक्षा में वहार में लाना चाहिए। समावेशी शिक्षा या एकीकरण सिद्धांत की ऐतिहासिक जड़ें कनाडा या अमेरिका से ुड़ी है। प्राचीन शिक्षा पद्धति की जगह नई शिक्षा नीति ा प्रयोग आधुनिक समय में होने लगा है। समावेशी क्षा विशेष विद्यालय या कक्षा को स्वीकार नहीं रता। अशक्त बच्चों को सामान्य बच्चों से अलग रना अब मान्य नहीं है। विकलांग बच्चों को भी ामान्य बच्चों की तरह ही शैक्षणिक गतिविधियों में भाग ने का अधिकार है। समावेशी शिक्षा के अंतर्गत ामान्यतः छात्र एक कक्षा में अपनी आयु के हिसाब से खे जाते हैं चाहे उनका अकादमिक स्तर ऊँचा या चा ही क्यों न हो। शिक्षकों द्वारा सामान्य और कलांग सभी बच्चों से एक जैसा बर्ताव किया जाता । अशक्त बच्चों की मित्रता अक्सर सामान्य बच्चों के थ करवायी जाती है ताकि उनमें हीनता की भावना पनपे और आपस में सहयोग की भावना का विकास । सहयोग की भावना विकसित करने हेतु शिक्षकों रा कुछ तरीकों का उपयोग किया जाता है–

- सामुदायिक भावना को बढ़ाने के लिए खेलों का आयोजन।
- विद्यार्थियों को समस्या के समाधान में शामिल करना।
- किताबों और गीतों का आदान–प्रदान।
- संबंधित विचारों का कक्षा में आदान–प्रदान।
- छात्रों में समुदाय की भावना विकसित करने हेतु कार्यक्रम तैयार करना।
- छात्रों को शिक्षक की भूमिका निभाने का अवसर देना।
- विभिन्न क्रियाकलापों के लिए छात्रों का दल बनाना।
- प्रसन्नचित वातावरण का निर्माण करना।
- अभिभावकों का सहयोग लेना।
- विशेष प्रशिक्षित शिक्षकों की सेवा लेना।

2 समावेशी शिक्षा के उद्देश्य

1. शारीरिक दोष युक्त विभिन्न बालकों की पहचान करना।
2. शारीरिक दोष की दशा को बढ़ाने से पहले कि वो गम्भीर स्थिति को प्राप्त हो, उनके रोकथाम के लिए सर्वप्रथम उपाय किया जाना।
3. बालकों के सीखने की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए नवीन विधियों द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करना।
4. शारीरिक रूप से विकृतियुक्त बालकों का पुनर्वास कराया जाना।
5. शारीरिक रूप से विकृतियुक्त बालकोंकी शिक्षण समस्याओं की जानकारी प्रदान करना तथा सुधार हेतु संगठन की तैयारी करना।
6. बालकों की असमर्थताओं का पता लगाकर उनको दूर करने का प्रयास करना।

3 समावेशी शिक्षा हेतु रणनीतियाँ

1. समावेशित विद्यालय वातावरण

बालकों की शिक्षा चाहे वह किसी भी स्तर की हो, उसमें विद्यालय के वातावरण का बहुत योगदान होता है। विद्यालय का वातावरण ही कुछ चीजों की शिक्षा बालकों को स्वयं देता है। समावेशी शिक्षा के लिए आवश्यक है कि विद्यालय का वातावरण सुखद होना चाहिए। इसके अतिरिक्त उपकरण, संसाधन, भवन आदि का समुचित प्रबंध आवश्यक है।

2. सबके लिए विद्यालय